अगस्त कॉम्ट: त्रि–स्तरीय नियम तथा प्रत्यक्षवाद

(Auguste Comte: Law of three stages & Positivism)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

त्रि–स्तरीय नियम

- **Course of Positive Philosophy** (6 Vol.), 1830–42
- सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया तथा विकास की क्रमबद्ध व्याख्या
- ज्ञान के विकास की मानव मस्तिष्क के विकासीय चरणों के आधार पर व्याख्या
- सामाजिक उद्विकास की त्रि–स्तरीय व्याख्या
- **अगस्त कॉम्ट:** *'मानव को अपनी भावना/संवेदना से क्रिया अथवा व्यवहार करना होता है तथा उस क्रिया को संपन्न करने हेतु मन–मस्तिष्क से सोचना/विचारना भी पड़ता है।'*

त्रि–स्तरीय नियम

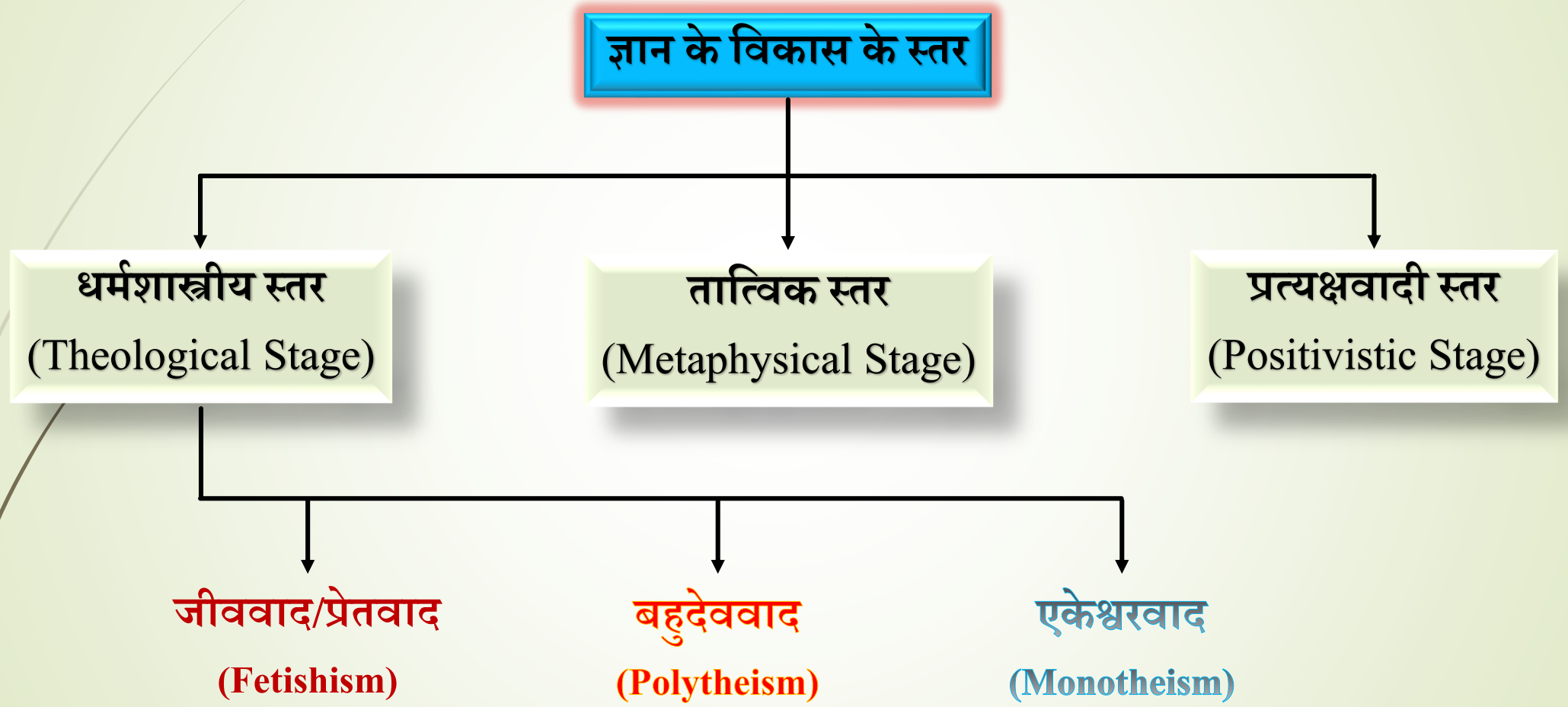
ज्ञान के विकास के स्तर
धर्मशास्त्रीय स्तर
(Theological Stage)
तात्विक स्तर
(Metaphysical Stage)
प्रत्यक्षवादी स्तर
(Positivistic Stage)
जीववाद/प्रेतवाद
(Fetishism)
बहुदेववाद
(Polytheism)
एकेश्वरवाद
(Monotheism)

त्रि–स्तरीय नियम

1) धर्मशास्त्रीय अवस्था: 1300 तक (देव, दानव, काल्पनिक शक्ति)

- मानव मस्तिष्क के विकास का प्रारंभिक स्तर
- प्रत्येक घटना अथवा परिस्थिति के पीछे दैवीय शक्ति/सत्ता
- प्रत्येक घटना तात्कालिक कारणों का परिणाम
- ज्ञान में आस्था व विश्वास के तत्व, विवेकशीलता का अभाव

क) जीववाद: संसार की प्रत्येक वस्तु में जीवन

ख) बहुदेववाद: प्रत्येक कार्य के लिए अलग देवता

ग) एकेश्वरवाद: एक देवता, सर्वशक्तिशाली–सर्वशक्तिमान

त्रि–स्तरीय नियम

2) तात्विक अवस्था: 1300–1800 (सार, अस्तित्व, पदार्थ, दुर्घटना)

- मानव मस्तिष्क अपेक्षाकृत अधिक विकसित
- क्या, क्यों, कैसे जैसे प्रश्नों की शक्ति
- दैवीय सत्ता को स्वीकारोक्ति, लेकिन अमूर्त रूप से

3) प्रत्यक्षवादी अवस्था: 1800 के पश्चात (निरीक्षण, परीक्षण, तर्क)

- विकसित मानव मस्तिष्क
- वैज्ञानिक आधार पर सत्यता की खोज
- वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग
- प्रत्यक्ष व वास्तविक घटनाओं के अध्ययन को महत्व

त्रि–स्तरीय नियम

ज्ञान के स्तर	अवस्था	प्रमुख विशेषताएँ	प्रधान भूमिकाएँ	प्रमुख सामाजिक इकाइयाँ
प्रथम (प्रारंभिक)	**धार्मिक**	सर्वशक्तिमान देवी/देवताओं की मान्यता दैवीय शक्ति व घटनाओं पर विश्वास	पुजारी/ पुरोहित/ मौलवी/ पादरी आदि धर्मगुरु, सेना	राजतंत्र, परिवार
द्वितीय (मध्यकालीन)	**तात्विक**	रहस्यमयी शक्तियों तथा अमूर्त क्षमताओं पर विश्वास	बुद्धिजीवियों एवं दार्शनिक विद्वानों को महत्व	'राज्य' संस्था का अभ्युदय
तृतीय (चरम एवं अंतिम)	**प्रत्यक्षवादी**	वैज्ञानिक विधियों पर आधारित अनुसंधान व सिद्धांत को महत्व	वैज्ञानिक, उद्योगपति/ पूंजीपति, इंजीनियर, लेखक, आचार्य	लोकतांत्रिक प्रणाली, नागरिक समाज, मानवता का धर्म

त्रि–स्तरीय नियम

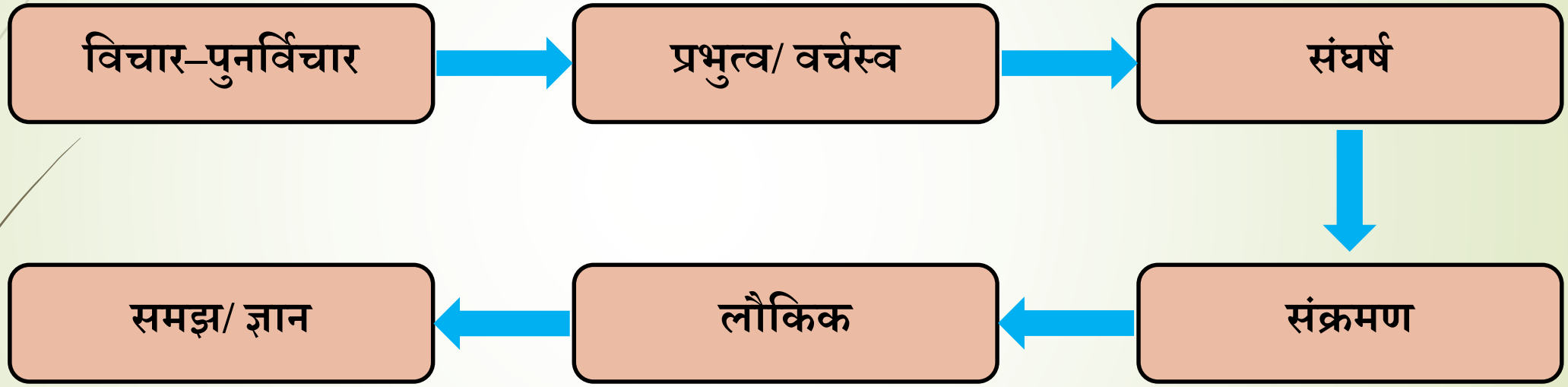

प्रत्यक्षवाद

- **Course of Positive Philosophy** (6 Vol.), 1830–42
- अगस्त कॉम्ट: समाज का विज्ञान
  - अतीत की घटनाओं की व्याख्या
  - भविष्य का अनुमान लगाना
- कॉम्ट का मानना था कि अन्य विज्ञानों की ही भांति यह नवीन सामाजिक विज्ञान (समाजशास्त्र) भी अवलोकन तथा तर्क पर आधारित होगा।
- कॉम्ट के अनुसार मात्र तथ्यों का संकलन कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। वे लिखते हैं, *'तथ्यों को किसी सिद्धांत के मार्गदर्शन के बिना नहीं देखा जा सकता है।'*

प्रत्यक्षवाद

- प्रत्यक्षवाद एक वैज्ञानिक पद्धति है, जिसके माध्यम से किसी भी घटना, समस्या अथवा परिस्थिति का अध्ययन किया जाता है।
- वैज्ञानिक, व्यवस्थित तथा तर्क पर आधारित
- **प्रत्यक्षवाद के साधन**
  - निरीक्षण (Observation)
  - परीक्षण (Experimentation)
  - तुलना (Comparison)
  - ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method)

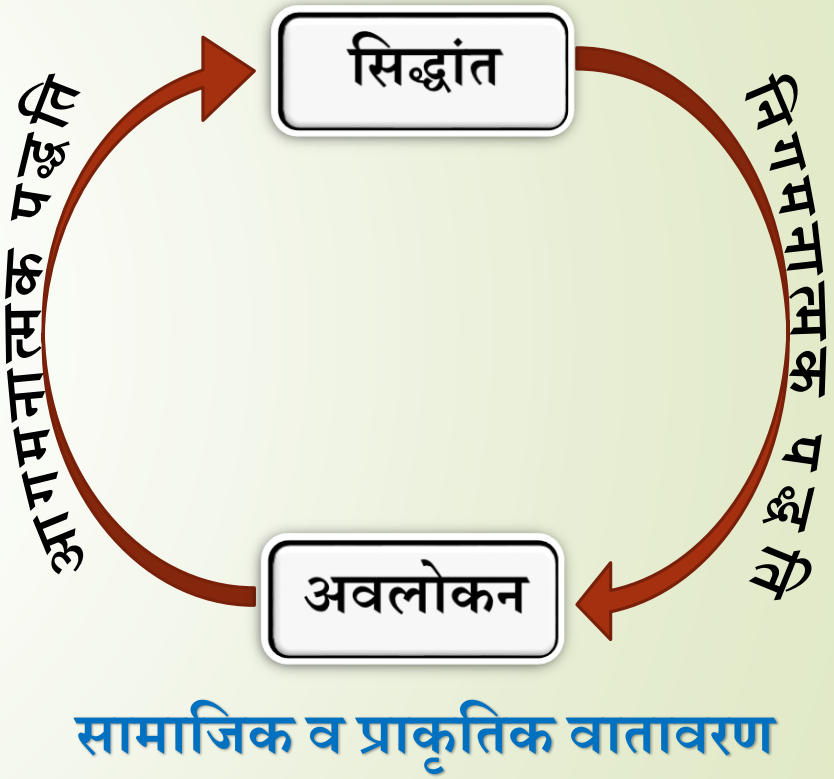

प्रत्यक्षवाद

- वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग
- वस्तुनिष्ठ विज्ञान
- प्रत्यक्ष व वास्तविक जगत का अध्ययन
- भविष्यवाणी करने की क्षमता

- प्रत्यक्षवाद वह पद्धति है, जिसमें अवलोकन, परीक्षण तथा तुलनात्मकता के आधार पर वास्तविक/ यथार्थ विश्लेषण किया जाता है।

नव प्रत्यक्षवाद

- **नव प्रत्यक्षवाद:** तार्किक प्रत्यक्षवाद, तार्किक अनुभववाद
- **प्रवर्तक:** फ्रैंकलिन. एच. गिडिंग्स, जॉर्ज ए. लुंडबर्ग
- 20वीं सदी के आरंभ में अमेरिकी समाजशास्त्रियों द्वारा चलाया गया एक आंदोलन
- परिमाणीकरण, व्यवहारवाद तथा प्रत्यक्षवादी ज्ञानमीमांसा
- गणितीय समाजशास्त्र के रूप में नव प्रत्यक्षवाद का विकास
- वस्तुनिष्ठ वास्तविकता तथा अनुभववाद
- नव प्रत्यक्षवाद इस बात पर जोर देता है कि एक वैज्ञानिक सिद्धांत का सबसे महत्वपूर्ण मानदंड परीक्षण करने की क्षमता होती है तथा केवल गणितीय औपचारिक सिद्धांत ही आनुभविक रूप से रूप से परीक्षण योग्य होते हैं।

Next Class:

ईमाइल दुर्खीम: सामाजिक तथ्य

(Emile Durkheim: Social Fact)